अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) तिर्यंच गति में दण्डक होते हैं-
(क) 7 (ख) 8
(ग) 9 (घ) 10 (ग)

(ii) एकीभावपूर्वक प्रबलता से कर्मों का घात करना कहलाता है-
(क) एकाग्रता (ख) ध्यान
(ग) कायोत्सर्ग (घ) समुद्घात (घ)

(iii) असन्नी मनुष्य में संहनन होते हैं-
(क) नाराच (ख) अर्द्धनाराच
(ग) कीलिका (घ) सेवार्त्तक (घ)

(iv) असन्नी खेचर की उत्कृष्ट अवगाहना होती है-
(क) प्रत्येक धनुष (ख) प्रत्येक गाउ
(ग) प्रत्येक योजन (घ) 1000 योजन (क)

(v) कौनसा जीव सम्यक्त्व प्राप्ति के योग्य नहीं होता है-
(क) भवी (ख) शुक्ल पक्षी
(ग) सन्नी पंचेन्द्रिय (घ) अनाकार उपयोगी (घ)

(vi) जीव के परिणाम विशेष को कहते हैं-
(क) देशना (ख) करण
(ग) प्रायोग्य (घ) क्षयोपशम (ख)

(vii) उपशम श्रेणि होती है-
(क) पडिवाई (ख) अपडिवाई
(ग) दोनों (घ) कोई नहीं (क)

(viii) गत्यन्तर में गुणस्थान होते हैं-
(क) 1,3,5 (ख) 1,2,7
(ग) 1,4,11 (घ) 1,2,4 (घ)

(ix) आठ द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा निम्न में से है-
(क) पन्नवणा सूत्र पद-15 (ख) पन्नवणा सूत्र पद-9
(ग) पन्नवणा सूत्र पद-18 (घ) पन्नवणा सूत्र पद-21 (क)

(x) चार अनुत्तर विमान के देवता, पृथ्वीकाय में भविष्यकाल सम्बन्धी द्रव्येन्द्रियाँ कितनी करेंगे-
(क) 8 (ख) 16
(ग) अनन्त (घ) नहीं करेंगे (घ)

(xi) कितने प्रकार के आराधक बताये गये हैं-
(क) 5 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 2 (ख)

(xii) उत्थान बल पुरुषकार पराक्रम को कहते हैं-
(क) करण वीर्य (ख) ज्ञान आत्मा
(ग) उपयोग आत्मा (घ) द्रव्य आत्मा (क)

(xiii) चारित्र आत्मा में वीर्य आत्मा की होगी-
(क) नियमा (ख) भजना
(ग) दोनों (घ) दोनों नहीं (क)

(xiv) शक्ति रूप वीर्य को कहते हैं-
(क) वीर्य आत्मा (ख) करण वीर्य
(ग) लब्धि वीर्य (घ) अकरण वीर्य (ग)

(xv) असंयत भव्य द्रव्य देवों का थोकड़ा निम्न में चलता है-
(क) भगवती सूत्र शतक 1 उद्दे. 4 (ख) भगवती सूत्र शतक 2 उद्दे.2
(ग) भगवती सूत्र शतक 11 उद्दे. 2 (घ) भगवती सूत्र शतक 1 उद्दे. 2 (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) हड्डियों की रचना विशेष को संहनन कहते हैं। (हाँ)
(ii) चौथी नारकी के नेरिये की उत्कृष्ट स्थिति 7 सागरोपम की होती है। (नहीं)
(iii) पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय में तीन गति के जीव उत्पन्न हो सकते हैं। (हाँ)
(iv) तीर्थंकर दीक्षा पूर्व श्रावक नहीं बनते हैं। (हाँ)
(v) तीसरे गुणस्थान वाला जीव सीधा श्रावक तथा साधु नहीं बन सकता है। (हाँ)
(vi) अविरति सम्यग्दृष्टि से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणा है। (नहीं)
(vii) संज्वलन लोभ कषाय का दसवें गुणस्थान में प्रदेशोदय ही रहता है। (नहीं)
(viii) 25 बोल के चौथे बोल में भावेन्द्रिय की अपेक्षा कथन है,द्रव्येन्द्रिय की अपेक्षा नहीं। (हाँ)
(ix) सर्वार्थसिद्ध विमान के देव ने अतीतपने सर्वार्थसिद्ध विमान के देवपने 8 द्रव्येन्द्रियाँ की (नहीं)
(x) ज्ञान आत्मा में उपयोग आत्मा की भजना नहीं होती है। (हाँ)
(xi) चारित्र आत्मा से योग आत्मा वाले विशेषाधिक होते हैं। (नहीं)
(xii) उपयोग लक्षण सभी जीवों में एक समान होता है। (हाँ)
(xiii) असन्नी जीव भी काल करके देवता बन सकते हैं। (हाँ)
(xiv) अभवी जीव असंयत भव्य, द्रव्य देव हो सकता है। (हाँ)
(xv) नवग्रैवेयक में आराधक साधुजी ही जाते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	युगलिक मनुष्य	(क) परिणामों में निवृत्ति	समचौरस संस्थान
(ii)	देवता	(ख) देवगति	3 ज्ञान
(iii)	सास्वादन सम्यग्दृष्टि	(ग) द्रव्य, दर्शन, उपयोग की नियमा	4 का उदय 3 का उपशम
(iv)	निवृत्ति बादर गुणस्थान	(घ) 3 ज्ञान	परिणामों में निवृत्ति
(v)	आजीविक	(च) द्रव्य, दर्शन, आत्मा की नियमा	उत्कृष्ट बारहवाँ देवलोक
(vi)	आराधक श्रावक	(छ) समचौरस संस्थान	देवगति
(vii)	ज्ञान आत्मा	(ज) असंयत	द्रव्य, दर्शन, उपयोग की नियमा
(viii)	उपयोग आत्मा	(झ) मंत्र-जंत्रादि करने वाले	द्रव्य, दर्शन, आत्मा की नियमा
(ix)	आभियोगिक	(य) उत्कृष्ट बारहवाँ देवलोक	मंत्र-जंत्रादि करने वाले
(x)	चारित्र परिणाम से शून्य	(र) 4 का उदय 3 का उपशम	असंयत

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं 15वें नम्बर का दण्डक हूँ। वायुकाय
(ii) मैं ऐसा मनुष्य हूँ कि मुझमें तेजो लेश्या होती है लेकिन तैजस समुद्घात नहीं। युगलिक मनुष्य
(iii) मेरे क्षयोपशम से मन, वचन और काया का व्यापार होता है। वीर्यान्तराय कर्म
(iv) मेरे वैक्रिय शरीर की अवगाहना मूल शरीर से अधिक नहीं हो सकती। सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(v) मैं ग्यारहवें, बारहवें तथा तेरहवें गुणस्थान में लगने वाली क्रिया हूँ। ईरियावहिया क्रिया
(vi) हम अमर गुणस्थान हैं। 3,12,13 गुणस्थान
(vii) मैं उपशम श्रेणि सहित ही प्राप्त होता हूँ। द्वितीयोपशम
(viii) मैं प्रथम गुणस्थान से सीधा चतुर्थ गुणस्थान में ही जाता हूँ। अनादि मिथ्यादृष्टि जीव
(ix) मैं 6 द्रव्येन्द्रिय वाला जीव हूँ। चतुरिन्द्रिय
(x) हम अधिकतम 15 भव ही करते हैं। आराधक साधु-साधवी
(xi) मेरा पहला तथा अंतिम भव नियमा आराधक का होता है। आराधक जीव

(xii) हम सभी आत्माओं में सबसे थोड़े हैं। चारित्र आत्मा
(xiii) मैं सामान्य ज्ञान से युक्त आत्मा हूँ। दर्शन आत्मा
(xiv) मेरा अर्थ हँसी-मजाक करने वाला साधु हूँ। कान्दर्पिक साधु
(xv) हम उत्कृष्ट नवमें ग्रैवेयक में उत्पन्न हो सकते हैं। स्वलिंगी दर्शन भ्रष्ट साधु

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) सिद्ध भगवान की जघन्य तथा उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।
उ. आत्म-प्रदेशों की अवगाहना जघन्य एक हाथ आठ अंगुल, मध्यम चार हाथ सोलह अंगुल और उत्कृष्ट 333 धनुष 32 अंगुल।

(ii) विशुद्धि लब्धि किसे कहते हैं ?
उ. कर्मों की शुभ प्रकृतियों के अनुभाग में प्रति समय अनन्त गुणी वृद्धि करना।

(iii) 'मल दोष' को परिभाषित कीजिए।
उ. छद्मस्थपन की तरंग से सम्यक्त्व में मलिनता आ जाने को मल दोष कहते हैं।

(iv) द्वितीयोपशम का दूसरा भंग स्थिति सहित लिखिए।
उ. चार की विसंयोजना, तीन का उपशम (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त)।

(v) सातवें गुणस्थान की आराधना का फल लिखिए।
उ. इस गुणस्थान का आराधक जघन्य उसी भव में, मध्यम तीसरे भव में और उत्कृष्ट सात-आठ भवों में मोक्ष जाता है।

(vi) चौथे तथा पाँचवें गुणस्थान में परीषह लिखिए।
उ. चौथे गुणस्थान में अविरति परिणाम होने के कारण दर्शन परीषह के सिवाय शेष परीषह संभव नहीं हैं। पाँचवें गुणस्थान में श्रमण भूत प्रतिमा आदि की अपेक्षा से बाईसों परीषह हो सकते हैं।

(vii) द्रव्येन्द्रिय किन शरीरों के होती हैं ?
उ. औदारिक, वैक्रिय तथा आहारक इन तीन शरीरों की होती हैं।

(viii) चार अनुत्तर विमान के एक-एक देवता की स्वस्थान सम्बन्धी तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।
उ. चार अनुत्तर विमान के एक-एक देवता ने द्रव्येन्द्रियाँ अतीत में अनन्त कीं, वर्तमान में आठ हैं और भविष्य में आठ अथवा सोलह अथवा चौबीस यावत् संख्यात करेंगे।

(ix) विराधक संयमियों की उत्पत्ति-गति उत्कृष्ट प्रथम देवलोक कैसे समझनी चाहिए ? स्पष्ट कीजिए।
उ. ऐसे साधु-साध्वियों की समझनी चाहिए जो कि मूल गुण व उत्तर गुण में दोष लगाने के बाद उनकी शुद्धि नहीं कर पाते, आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रयश्चित्त आदि द्वारा अपने आपको शुद्ध नहीं बना पाते।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) 30 अकर्मभूमि की स्थिति लिखिए।
उ. 5 हेमवत और 5 ऐरण्यवत की स्थिति एक पल्योपम।
5 हरिवास और 5 रम्यक्वास की स्थिति दो पल्योपम।
5 देवकुरु और 5 उत्तरकुरु की स्थिति तीन पल्योपम।
56 अन्तर्द्वीपों की स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग।

इनमें जघन्य स्थिति कुछ कम और उत्कृष्ट पूर्ण होती है।

(ii) तीन विकलेन्द्रिय की अवगाहना लिखिए।
उ. जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, बेइन्द्रिय की उत्कृष्ट 12 योजन, तेइन्द्रिय की 3 गाउ (कोस) और चौरेन्द्रिय की 4 गाउ की।

(iii) पर्याप्ति को परिभाषित कीजिए।
उ. आत्मा की वह शक्ति विशेष-जिससे जीव पुद्गलों को ग्रहण करके आहार-शरीरादि रूप में परिणमावे, उसे पर्याप्ति कहते हैं।

(iv) दसवें देवलोक, तीसरे तथा सातवें ग्रैवेयक की स्थिति लिखिए।
उ.

दसवें देवलोक	19 सागरोपम	20 सागरोपम
तीसरे ग्रैवेयक	24 सागरोपम	25 सागरोपम
सातवें ग्रैवेयक	28 सागरोपम	29 सागरोपम।

(v) चौथे गुणस्थान में नहीं बन्धने वाले 7 बोलों के नाम लिखिए।
उ. 1. नारकी, 2. तिर्यंच, 3. भवनपति, 4. वाणव्यन्तर, 5. ज्योतिषी, 6. स्त्रीवेद और 7. नपुंसकवेद।

(vi) क्षयोपशम समकित वाले जीव के द्वितीयोपशम प्राप्ति की प्रक्रिया के विसंयोजना के 2 भंग लिखिए।
उ. 4 की विसंयोजना, 2 का उपशम, 1 का वेदन- (गुणस्थान 4 से 7 तक, स्थिति-जघन्य अन्तर्मुहर्त, उत्कृष्ट 66 सागरोपम झाझेरी।
4 की विसंयोजना, 2 का उपशम, 1 का वेदन- (गुणस्थान 6, 7, स्थिति-जघन्य, उत्कृष्ट-अन्तर्मुहर्त)

(vii) उदीरणा को परिभाषित कीजिए।
उ. उदयावलिका के बाहर स्थित कर्म परमाणुओं को कषाय सहित या कषाय रहित योग संज्ञा वाले वीर्य विशेष के द्वारा उदयावलिका में लाकर उनका उदयप्राप्त कर्म परमाणुओं के साथ अनुभव करना उदीरणा कहलाता है।

(viii) छठे तथा सातवें गुणस्थान का आकर्ष लिखिए।
उ. छठा और सातवाँ गुणस्थान मिलाकर एक भव की अपेक्षा जघन्य एक बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व 100 बार, अनेक भवों की अपेक्षा जघन्य दो बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व 1000 बार।

(ix) भविष्यकाल की अपेक्षा 9 द्रव्येन्द्रियाँ किस प्रकार समझनी चाहिए?
उ. कम से कम 9 द्रव्येन्द्रियाँ जहाँ भविष्यकाल की अपेक्षा कही हैं, उसे इस प्रकार समझना चाहिए- अगला भव बादर पृथ्वी, पानी, वनस्पति का कर ले तथा उसके बाद मनुष्य बनकर मोक्ष में चला जाये।